9. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल,
दु:ख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही!
हो इसी कर्म पर वज्रापात
यदि धर्म, रहे नत सदा माथ

खण्ड—स **2×14=28**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

10. लम्बी कविता के उद्‌भव एवं विकास पर एक निबंध लिखिए।

11. मुक्तिबोध के काव्य पक्ष का विस्तृत विवेचन कीजिए।

12. खण्डकाव्य के रचना विधान के आधार पर 'प्रवाद पर्व' की समीक्षा कीजिए।

13. 'कुआनो नदी' कविता के अनुभूति एवं अभिव्यञ्जनात्मक पक्ष का विस्तृत विवेचन कीजिए।

HD–05

June – Examination 2024

B.A. (Part III) Examination

HINDI LITERATURE

(आधुनिक काव्य)

Paper : HD-05

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **70***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **7×2=14**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1. (i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल का दूसरा नाम क्या दिया ?

(ii) 'लम्बी' कविता की **दो** विशेषताएँ लिखिए।

(iii) हिन्दी के किन्हीं **दो** खण्डकाव्यों के नाम लिखिए।

(iv) 'सरोज स्मृति' कविता में सरोज कौन है ?

(v) 'परिवर्तन' कविता का वर्ण्य-विषय क्या है ?

(vi) 'कुआनो नदी' कविता के रचयिता कौन हैं ?

(vii) 'फैंटेसी' शिल्प में किस रचनाकार ने लम्बी कविता लिखी ?

खण्ड—ब **4×7=28**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 7 अंक का है।

2. खण्डकाव्य का स्वरूप विवेचन करते हुए उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. 'परिवर्तन' कविता के अनुभूति एवं अभिव्यक्ति पक्ष पर टिप्पणी लिखिए।

4. 'सरोज स्मृति' कविता के प्रतिपाद्य को अपने शब्दों में लिखिए।

5. 'ब्रह्मराक्षस' कविता के वर्ण्य-विषय एवं उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

6. 'प्रवाद पर्व' के अनुभूति पक्ष पर प्रकाश डालिए।

7. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

अहे निष्ठुर परिवर्तन!

तुम्हारा ही तांडव नर्तन

विश्व का करुण विवर्तन!

तुम्हारा ही नयनोन्मीलन,

निखिल उत्थान, पतन!

अहे वासुकि सहस्र फन!

लक्ष्य अलक्षित चरण तुम्हारे चिह्न निरन्तर

छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षस्थल पर।

8. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

स्वतंत्रता का अर्थ

अराजकता नहीं होता।

अराजकता

अपराध से भी गम्भीर होता है

क्योंकि

वह राजद्रोह की जननी है।